eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

PERSPECTIVE ARTICLE

गङ्गा : संस्कृत साहित्य में नामों एवं महिमा का एक सूक्ष्म अवलोकन तथा वर्तमान परिदृश्य

अम्बिका भट्ट [1*], पूर्णिमा श्रीवास्तव [1], पवन कुमार यादव [2]

[1] अध्यापक शिक्षा विभाग, कन्हैयालाल डी0ए0वी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की, भारत
[2] अध्यापक शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, टिहरी, भारत

सारांश: गङ्गा को भौगोलिक स्वरूप में भारत की प्रमुख नदियों में से एक माना जाता है, लेकिन भारतीय संस्कृति का अध्ययन करें, तो गङ्गा भारत की भौगोलिक नहीं, अपितु आध्यात्मिक, भावात्मक एवं सांस्कृतिक आधारशिला है जो भारतीय जीवन तथा भारतीयता का मुख्य आधार है। आदिकाल से ही भारत को देवभूमि की संज्ञा दी जाती रही है और इसी पृष्ठभूमि के आधार पर गङ्गा नदी को माँ गङ्गा के नाम से पुकारा जाता है। उसके व्यक्तित्व का आँकलन उसके भौगोलिक प्रसार से नहीं, अपितु उसके द्वारा प्रवाहित जीवन्तता से किया जा सकता है। गङ्गा पर सदियों से लेखन किया जा रहा है जो गङ्गा की महिमा को वर्णित करता है। प्रस्तुत पत्र में गङ्गा के संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य में वर्णित नाम एवं महिमा मण्डन के आधार का एक सूक्ष्म अवलोकन का एक प्रयास है तथा वर्तमान परिदृश्य में उसके ज्ञानात्मक, भावात्मक, मनोक्रियात्मक एवं दैवीय स्वरूप को समझने का प्रयास है, जो हमें हमारे जीवन के लिए शिक्षा प्रदान करती है। गङ्गा भारतीय जीवन की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आधारशिला के साथ–साथ गुणात्मक रूप में शैक्षिक आधारशिला भी है, जो आदर्श जीवन जीने के स्वरूप का निरूपण करती है एवं दिग्निर्देशित करती है कि शिक्षा प्रणाली को किस प्रकार संरचित किया जाना चाहिए कि व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य साकार हो । एक मनुष्य को प्रकृति की धरोहर का संरक्षण किस प्रकार करना चाहिए इस पर भी मन्थन अतिआवश्यक है। वर्तमान परिदृश्य में गङ्गा किस प्रकार अपने स्वरूप में है, मनुष्य का इसमें क्या योगदान है? अपने नामों के अनुकूल विपरीत परिस्थितियों में भी गङ्गा अपने दायित्वों का निर्वहन किस प्रकार करती जा रही है?

कूट शब्द: गङ्गा, नाम, माहात्म्य, शिक्षण, स्वरूप

*CORRESPONDENCE
Address Ambika Bhatt Department of Teacher Education, KL DAV (PG) College Roorkee, Haridwar, Uttarakhand.
Email awantika.bhatt@gmail.com

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2023 Ambika Bhatt et al.
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

प्रस्तावना

गङ्गा भारत की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण नदी है। इसका वर्णन भारतीय सभ्यता के उद्गम स्थल के रूप में है। लगभग 40% भारत की आबादी गङ्गा नदी के किनारे बसी हुई है। गङ्गा के जल का प्रयोग बड़े पैमाने पर घरेलू, औद्योगिक और कृषि के लिए किया जाता है। गङ्गा नदी भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र के एक–चौथाई से थोड़ा अधिक क्षेत्र को अधिकृत करती है। गङ्गा नदी भागीरथी के रूप में गंगोत्री ग्लेशियरों से निकलती है, यह उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में हिमालय में स्थित है।

गङ्गा 2,525 किलोमीटर की यात्रा करके बंगाल के समुद्र में मिलती है। [1] भारत में, गङ्गा नदी अपनी यात्रा में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, और दिल्ली को समाहित करती है। इसके तटों पर कई महत्वपूर्ण पवित्र शहर और गांव स्थित हैं, जो गङ्गा की सुंदरता के कारण दुनिया भर से लोगों को आकर्षित करते हैं। गङ्गा नदी के सभी भाग को तीन प्रमुख संभागों में विभाजित किया जा सकता है: (क) गौमुख से हरिद्वार तक (लगभग 294 किमी), (ख) हरिद्वार से वाराणसी तक (लगभग 1082 किमी) और (ग) निचली गङ्गा, वाराणसी से गङ्गा सागर तक (लगभग 1134 किमी)। गङ्गा नदी सिवालिक पहाड़ियों से बहकर हरिद्वार शहर तक बहती है।

गङ्गा के विशेष महत्व का कारण भौगोलिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, पारिस्थितिकीय, सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक कारणों को समर्पित मानते हुए, भारत सरकार ने 20 फरवरी 2009 को गङ्गा को राष्ट्रीय नदी घोषित कर दिया और राष्ट्रीय गङ्गा नदी घाटी प्राधिकरण (National Ganga River Basin Authority – NGRBA) की स्थापना की गई ताकि इसे प्रदूषण और अतिउपयोग से बचाया जा सके। [2]

पिछले तीन दशकों में गङ्गा मैदान के पुरातत्व खोज में विशेष तरीके से वृद्धि हुई है। गङ्गा के सर्वधा सीमांत भाग में 10,000 ईसा पूर्व की संस्कृति की खोज ने हमारे ज्ञान के लिए अलग योगदान को निरूपित किया है। मध्य गङ्गा घाटी में कई स्थलों पर की गई खुदाई से सिद्ध होता है उस समय के लोग पेड़, डाली और पत्तियों से बने झोपड़ों में रहते थे। उन्होंने खाने के लिए खाद्य अनाजों का उत्पादन किया, जिसका प्रमाण केवल गङ्गा मैदान और विंध्यों के खुदाए स्थलों से मिले कई पीसने वाले पत्थरों तथा चावल से भी है। इस क्षेत्र की प्राचीन खेती संस्कृति ने सिद्ध किया है कि गङ्गा घाटी विश्व में कृषि के एक प्राचीन केंद्रों में से एक थी। [3]

भारत में गङ्गा नदी के लिए विशेष श्रद्धा और सम्मान भारतीय संस्कृति के जीवन की तरह प्राचीन है, जो प्राचीन भारतीय ग्रंथों जैसे वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण और महाभारत में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। ऋग्वेद 10.75 में दिया गया है, जिसमें पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों की सूची है। ऋग्वेद 6.45.31 में गङ्गा शब्द का स्पष्ट उल्लेख है, जबकि ऋग्वेद 3.58.6 कहता है कि "तुम्हारा प्राचीन निवास, तुम्हारा शुभ स्नेह, हे वीरों, तुम्हारी संपत्ति जाह्नवी के किनारे है। ऋग्वेद 1.116.18–19 में भी गङ्गा का उल्लेख होता है। ऋग्वेद में भौगोलिक वर्णन में सरस्वती और गङ्गा को पवित्र नदी माना जाता है । पुराणों की कथा और भारत का पवित्र भूगोल का संबद्धन अविभाज्य हैं। गङ्गा नदी रूप में नही परंतु देवी रूप में भारत में प्रतिष्ठित है। वास्तव में, गङ्गा के प्रति आदर भारतीयता का अंग है और भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। गङ्गा भारत की "धरोहर" है। [4––6]

सारांश में, गौमुख के ग्लेशियरों से निकलकर मैदानों में पहुँचने वाला अविरल जल प्रवाह जिसे गङ्गा नदी की संज्ञा दी जाती है, वह जल का एक भौगोलिक प्रतीक नहीं है, अपितु भारतीयों के सामाजिक, साहित्यिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का आधार–स्तम्भ है। इसके तट पर ही विविध संस्कृतियों का उद्भव, समाज और सभ्यता का प्रसार हुआ है जिसके फलस्वरूप सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता प्रकट हुई है। इसके जल ने जीवन को अर्थार्जन के विविध अवसर उपलब्ध कराएँ हैं, चाहे वह कृषि के माध्यम से हो या यातायात के मार्ग के रूप में, या फिर जलीय जीवन के माध्यम से, इतना ही नहीं कवियों की लेखनी को विषय देने का काम भी गङ्गा ने किया है, जो सौन्दर्य और गुणों के माध्यम से साहित्यकारों के लेखन का केन्द्र रही है। जिस प्रकार निरपेक्ष होकर माता की भाँति अपनी सभी सन्तानों (मनुष्य–जीवन) का पोषण इस जलप्रवाह ने किया है और कर रही है, वह इसे दैव्य स्वरूप प्रदान करता है तथा इस कारण गङ्गा को देवी माना जाता है और उसका पूजन–अर्चन किया जाता है, इसका एक कारण यह भी है कि गङ्गा का अवतरण धरती पर स्वर्ग से माना जाता है। गङ्गा के सान्निध्य में समय व्यतीत करते हुए उसके गुणों का अवलोकन कर अपने अनुभवों के आधार पर भारतीय मनीषियों ने गङ्गा की महिमा को वर्णित करने का प्रयास किया है और ग्रन्थों में शाब्दिक स्वरूप प्रदान किया है। विविध प्रकार से माँ गङ्गा को शाब्दिक अभिव्यक्ति प्रदान की है, जो उसके व्यक्तित्व की व्यापकता को प्रतिबिम्बित करती है। प्रस्तुत आलेख, गङ्गा के साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को जानने का प्रयास है।

संस्कृत साहित्य एवं ग्रन्थों में गङ्गा वर्णन

संस्कृत–साहित्य एवं ग्रन्थों में गङ्गा का माहात्म्य एवं उसका नाम–विवेचन निम्नवत् अवलोकित होता है ।

ससि ललाट सुन्दर सर गङ्गा ।
नयन तीनि ऊपर भुजङ्गा ।।
(बाल काण्ड: दोहा 92, रामचरित मानस) [7]

अर्थ – शिवजी के सुंदर मस्तक पर चन्द्रमा और सिर पर गङ्गाजी, तीन नेत्र, साँपों का जनेऊ है ।

पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ।
सकल लोक जग पावनि गङ्गा ।।
(बाल काण्ड: दोहा 1.112, रामचरित मानस) [7]

अर्थ – जो तुमने श्रीरघुनाथजीकी कथाका प्रसङ्ग पूछा है, जो कथा समस्त लोकोंके लिये जगत् पवित्र करनेवाली गङ्गा–जीके समान है ।

रामचरितमानस के एक प्रसङग में गङ्गा की उपमा पवित्रता प्रदान करने वाली दी गई है जब माता पार्वती शङ्कर भगवान् से राम कथा श्रवण हेतु अनुरोध करती हैं और जिसे उपर्युक्त श्लोक में शङ्कर जी कहते हैं ।

संगमु सिंहासनु सुठि सोहा।
छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा ।।
चँवर जमुन अरु गंग तरंगा।
देखि होहिं दुख दारिद भंगा ।।
(अयोध्या काण्ड: दोहा 105, रामचरित मानस) [7]

अर्थ – [गङ्गा, यमुना और सरस्वतीका] सङ्गम ही उसका अत्यन्त सुशोभित सिंहासन है। अक्षयवट छत्र है, जो मुनियोंके भी मनको मोहित कर लेता है। यमुनाजी और गङ्गाजीकी तरंगें उसके [श्याम और श्वेत] चँवर हैं, जिनको देखकर ही दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है ।

प्रस्तुत दोहे में रामदरबार की व्याख्या की गई है। गङ्गा और यमुना का सङ्गम उनके उत्तम सिंहासन का निर्माण करता है, जबकि अमर बरगद (अक्षयवट के नाम से जाना जाने वाला) वृक्ष उनकी छतरी का प्रतिनिधित्व करता है, जो ऋषियों के हृदय को भी मन्त्रमुग्ध कर देता है। गङ्गा और यमुना की लहरें उसकी चँवर का निर्माण करती हैं, जिनका दर्शन मात्र ही दुःख और दरिद्रता को नष्ट कर देता है।

चले राम लछिमन मुनि संगा। गए जहाँ जग पावनि गङ्गा ।।
गाधिसूनु सब कथा सुनाई। जेहि प्रकार सुरसरि महि आई।।
(बाल काण्ड: राम चरित मानस 1.212.1) [7]

अर्थ – श्रीरामजी और लक्ष्मणजी मुनिके साथ चले। वे वहाँ गये, जहाँ जगत्को पवित्र करनेवाली गङ्गाजी थीं। महा–राज गाधिके पुत्र विश्वामित्रजीने वह सब कथा कह सुनायी जिस प्रकार देवनदो गङ्गाजी पृथ्वीपर आयी थीं ॥ श्री रामजी और लक्ष्मणजी मुनि के साथ चले। वे वहाँ गए, जहाँ जगत् को पवित्र करने वाली गङ्गाजी थीं। महाराज गाधि के पुत्र विश्वामित्रजी ने श्री राम–लक्ष्मण सहित सभी ऋषि मुनियों को देवनदी गङ्गाजी के पृथ्वी पर अवतरण की कथा कह सुनाई।

इस श्लोक से ज्ञात होता है कि गङ्गा की महिमा केवल एक काल विशेष तक नहीं अपितु कालातीत है ।

गंग सकल मुद मंगल मूला ।
सब सुख करनि हरनि सब सूला ।।
(अयोध्या काण्ड: दोहा 87, रामचरित मानस 2.87.2) [7]

अर्थ – गङ्गाजी समस्त आनन्द – मङ्गलोंकी मूल हैं। वे सब सुखोंकी करनेवाली और सब पीड़ाओंकी हरनेवाली है।

गङ्गा ब्रह्मजल है, उसमें भगवान् के गुण होने के कारण वह सदैव शुद्ध, पवित्र एवं निर्विकार रहने वाला दिव्य पदार्थ है। इसीलिए वह शारीरिक एवं मानसिक रोगों को दूर करने और सांसारिक भोगों के साथ मोक्ष प्रदान करने की भी क्षमता रखता है।

अर्थात् गङ्गा जी समस्त आनन्द मङगलों की मूल हैं, वे सब सुख प्रदान करने वाली और सब पीड़ाओं को हरने वाली हैं। पवित्र गङ्गा जल पीते ही मन प्रसन्न और पवित्र हो जाता है। रामचरित मानस में गङ्गा को सभी प्रकार के आनन्द एवं मङगल का मूल कारण तथा सभी प्रकार के कष्टों का निवार–णकर्त्ता माना गया है।

त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरंत्वन्नीरे नरकान्त–कारिणि वरं मत्स्योअथवा कच्छपः ।
(श्रीगङ्गाष्टकम्, २) [8]

अर्थ – हे गङ्गे! तुम्हारे तीर पर स्थित तरु के कोटर में रहने वाला विहङ्ग बनना भी अधिक वरदायी है । हे नरक का अन्त करने वाली माँ! तुम्हारे जल में मछली अथवा कछुआ बन कर रहना भी वरदायी है ।

परमेश्वरी भागीरथी के तीर पर किसी भी भाँति रहने का सुयोग मिले, ऐसी अभिलाषा महर्षि वाल्मीकि ने स्वयं 'गङ्गा–ष्टकम्' के उपरोक्त द्वितीय श्लोक में अभिव्यक्त की है ।

नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा ।
विष्णुपादाब्जसम्भूता गङ्गा त्रिपथगामिनी ।।
भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी ।
द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये ।।
स्नानोद्यतः स्मरेन्नित्यं तत्र तत्र वसाम्यहम् ।।
(आचारेन्दु) [9]

अर्थ – नंदिनी, नलिनी, सीता, मालती, महापगा, वि–ष्णुपादाब्जसम्भूता, गङ्गा, त्रिपथगामिनी, भागीरथी, भोगवती, जाह्नवी और त्रिदशेश्वरी : इन बारह नाम का स्मरण जिस जिस जलाशय में स्नान के समय किया जाता है, वहाँ गङ्गा का वास होता है ।

महर्षि वाल्मीकि ही नहीं, अपितु शङ्कराचार्य जी ने भी, गङ्गा की महिमा का व्याख्यान किया है अपनी ज्ञानात्मक एवं भावात्मक संवेदनाओं को श्री गङ्गाजी के प्रति अभिव्यक्त किया है।

स्नानकालेऽश्रन्यतीर्थेषु जप्यते जाह्नवी जनैः ।
विना विष्णुपदीं कान्यत् समर्था ह्यघशोधने।।
(स्कन्द पुराण) [10]

अर्थ – अन्य तीर्थों में स्नान करते समय भी गङ्गा का नाम

ही लोग जपा करते हैं, गङ्गा के बिना अन्य कौन पाप धोने में समर्थ है?

तीर्थतोयं ततः पुण्यं गङ्गातोयं ततोधिकम्।
(अग्निपुराण) [11]

अर्थ – तीर्थ के जल से गङ्गा का जल अधिक श्रेष्ठ है ।

सहस्र नामों से पवित्र देवापगा गङ्गा के स्तवन गाये जाते हैं तथा अपने अघमर्षण की अभ्यर्थना की जाती है, दूध, गन्ध, धूप, दीप, पुष्प, माल्य आदि से पूजा–अर्चना की जाती है । गङ्गा के भू पर अवतरण की तिथि पर गङ्ग–दशहरा मनाया जाता है व स्नान–पुण्य आदि करके श्रद्धालु जन स्वयं को पवित्र करते हैं ।

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ।।
(शिवताण्डवस्तोत्रम्, १३) [12]

अर्थ – मैं कब प्रसन्न हो सकता हूं, अलौकिक नदी गङ्गा के निकट गुफा में रहते हुए,अपने हाथों को हर समय बांधकर अपने सिर पर रखे हुए, अपने दूषित विचारों को धोकर दूर करके, शिव मंत्र को बोलते हुए, महान मस्तक और जीवंत नेत्रों वाले भगवान को स्वयं समर्पित करके ।

'शिवताण्डवस्तोत्रम्' के १३ वें श्लोक में स्तुतिकार रावण अविरल प्रेमयुक्त तरल–सरल भावों के साथ अपने मन की साध को प्रकट करता है, जिसमें गङ्गा माहात्म्य प्रगट स्वतः हो जाता है।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
(ब्रह्मवैवर्तपुराण–ब्रह्मखण्ड अध्याय26 श्लोक 66.) [13]

अर्थ – हे गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी नदियों! (मेरे स्नान करने के) इस जल में (आप सभी) पधारिये एवं इसे पवित्र बनाइये, जिससे मैं इस पवित्रता को धारण कर सकूँ ।

गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्यवती वेदिका।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता जया गण्डकी
पूर्णाः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु मे मङ्गलम् ।।
[14]

अर्थ – गङ्गा, सिन्धु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी नर्मदा, कावेरी, सरयू महेंद्रतानाया, वेदिका, क्षिप्रा, वेदवती, महानदी, जाया, गण्डकी, समुद्र सहित पधारे और मंगल करे ।

वैदिक मंगल कार्यो में भी जल में गङ्गा का प्रमुख आवाहन किया जाता है ।

नमामि गङ्गे! तव पाद पङ्कजम् सुरसुरैर्वन्दितदिव्यरूपम् ।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यम् भावानुसारेण सदा नराणाम् ।।
[15]

अर्थ – हे गङ्गा मैया, हम आपके कमलरूपी चरणों में प्रणाम करतें हैं ।देव एवं दैत्यों आपके दिव्य रूप की वंदना करते है ।आप मनुष्यों को सदा उनके भावानुसार भोग एवं मोक्ष प्रदान करती हैं।

नारद पुराण के अनुसार जयेष्ट मास की शुक्ल पक्ष की दशमी, मंगलवार को मकर की सवारी करनी वाले माँ गङ्गा का धरती पर अवतरण हुआ था ।जिसे गङ्गा दशेहरा के नाम से भी जाना जाता है । [15]

स्रोतसामस्मि जाह्नवी ।
गीता (१०।३१) [16]

अर्थ – जल स्त्रोत में मे गङ्गा हूँ ।

गङ्गा का माहात्म्य मनुष्य के लिए ही नहीं, अपितु स्वयं ईश्वर का प्रतिरूप होने के कारण भगवान् श्री कृष्ण ने भी गीता में गङ्गा को अपना स्वरूप बतलाया है ।

इदं हि ब्रह्माण्डं सकल भुवन भोगभवनम्, तरङ्गैर्यस्यान्त–र्लुठति परितस्तिन्दुकमिव।
स एष श्रीकण्ठ प्रवितत जटाजूट जटिलः, जलानां सङ्घातस्तव जननि तापं हरतु नः॥
(गङ्ग लहरी, श्लोक 27) [17]

अर्थ – माँ! आपका जल, जिसने पूरे ब्रह्माण्ड को तिन्दुक फल की भांति प्लावित कर दिया था, परन्तु शिव की खोली हुई जटाओं के जाल में जो आबद्ध होकर रह गया और तत्पश्चात् कल्याणकारी जलधारा के रुप में अवतरित हुआ है, वह हमारे लिए तापहारी है ।

गङ्गा का ज्ञानात्मक, भावात्मक, मनोक्रियात्मक एवं दैवीय स्वरूप

प्रस्तुत पत्र में गङ्गा के संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य में वर्णित महिमा मण्डन के आधार पर उसके ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक स्वरुप को विश्लेषित करने का प्रयास किया जा रहा है, जो हमें हमारे जीवन के लिए शिक्षा प्रदान करती है।

गङ्गा का उपर्युक्त साहित्यिक विश्लेषण बताता है कि गङ्गा दैवीय स्वरूप है, जिसका तात्पर्य है देने की प्रवृति रखने वाला, बिना किसी विभेद के सबकी आवश्यकताओं को तृप्त करती है। उपर्युक्त वर्णन मुख्यतः गङ्गा के भावात्मक पक्ष की विराट्ता को अभिव्यक्त करता है, कि किस प्रकार वो सन्तान कि भाँति प्रत्येक प्राणी को अपने जल से जीवन आधार प्रदान करती है।

गङ्गा के भावात्मक पक्ष के साथ ही उसमें ज्ञानात्मक तथा

मनोक्रियात्मक पक्ष की विशिष्टता भी निहित है। गङ्गा के उक्त गुणों के साथ यदि उसके साक्षात् स्वरूप को ज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोक्रियात्मक पक्षों में विश्लेषित करें, तो, एक विराट् व्यक्तित्त्व का अवलोकन होता है, एवं दृष्टिगत होता है कि गङ्गा भावात्मक पक्ष के कारण ही वात्सल्य भाव से ओत–प्रोत हो प्रत्येक प्राणी को अपने जल की उपलब्धतता करवाती है, जो उसका व्यापक प्रसार है, ज्ञानात्मक रूप में यह हमें शिक्षा देती है कि पथ की बाधाओं को न्यून मानकर दृढ़निश्चयी रहते हुए हमें निरन्तर लक्ष्य की पूर्ति के लिए विवेकपूर्ण तरीके से तटस्थ रहना चाहिए तथा मनोक्रियात्मक पक्ष हमेशा ही यह इङ्गित करता है कि सर्वदा हमें क्रियाशील रहना चाहिए परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, गङ्गा के इन गुणों का अवतरण हमें प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्रणाली में करना चाहिए जो ज्ञान, भाव और क्रियात्मकता की द्योतक है। गङ्गा मनुष्य को कर्मठता, उदारता, व्यापकता की शिक्षा के साथ–साथ व्यक्तित्व को पवित्रता से निर्मित करने की शिक्षा प्रत्यक्ष रूप से प्रदान करती है। सर्वागङ्गीण–व्यक्तित्त्व विकास की परिकल्पना भी सही मायनों में तभी चरितार्थ हो सकेगी, जब गङ्गा को जल न मानकर एक जीता जागता सजीव शिक्षक मानकर उसके व्यक्तित्व का अनुसरण किया जायेगा, वास्तव में एक स्वस्थ व्यक्तित्व ही स्वस्थ और विकसित राष्ट्र का निर्माण करने में सक्षम होगा जो समूची धरा को भी समृद्ध करने में अपना योगदान अवश्यम्भावी रूप से देगा ।

गङ्गा भारतीय जीवन की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आधारशिला के साथ साथ गुणात्मक रूप में शैक्षिक आधारशिला भी है, जो आदर्श जीवन जीने के स्वरूप का निरूपण करती है एवं दिग्निर्देशित करती है कि शिक्षा प्रणाली को किस प्रकार संरचित किया जाना चाहिए कि व्यक्तित्व के सर्वागङ्गीण विकास का लक्ष्य साकार हो ।

उपसंहार

संस्कृत–साहित्य के प्राचीन ग्रन्थों, पुराणों, वेदों एवं मनीषियों की विचारधारा के अनुरूप गङ्गा का उपर्युक्त वर्णन गङ्गा को मात्र एक जलप्रवाह के रूप में परिलक्षित नहीं करता, वरन गङ्गा के समूचे विराट् अस्तित्त्व को स्वीकारता है, जिसके प्रति सदा से ही मनुष्य ने सम्मान एवं प्रेम का भाव अभिव्यक्त किया है। जबकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मनुष्य भौतिकवादी विचारधारा के प्रभाव में इतना गहरा डूबा हुआ है कि वह गङ्गा एवं इसके भीतर सरंक्षित समूची सम्पत्ति को केवल उपभोग की वस्तु के रूप में अङ्गीकार कर रहा है और नृशंषता से उसके दोहन में संलग्न है। गङ्गा के सन्दर्भ में आध्यात्मिक विचारधारा का अनुकरण कतिपय नहीं भी किया जाये, तब भी वैज्ञानिक–वस्तुनिष्ठ अवलोकन तथा विश्लेषण यही प्रमाणित करता है कि गङ्गा मनु–सभ्यता की ही नहीं, अपितु प्राणि–सभ्यता के जन्म, विकास एवं संरक्षण की परिचायक है, जिसके बिना जीवन की कल्पना निराधार ही प्रतीत होगी।

गङ्ग–महिमा शब्दातीत है, इसकी उपादेयता एवं इससे प्राप्त होने वाली जीवन्तता चिरन्तन तक मनुष्य जीवन के लिए यथावत् ही रहेगी। गङ्गा का व्यक्तित्व शब्दों द्वारा वर्णन की माँग नहीं करता, उसका अस्तित्व स्वयंभू है जो इसी बात से इङ्गित होता है कि वह मनुष्य ही नहीं, समूचे प्राणि–जगत की सञ्जीवनी है, तथापि आज उसका अस्तित्त्व सङ्कटग्रस्त है और कारण भी मनुष्य स्वयं। स्वार्थपरकता की पराकाष्ठा इतनी तीव्रता से विस्तारित हो रही है कि खुद उसे यह नहीं पता कि जिस प्रकार वह गङ्गा के दोहन एवं उसके प्राकृतिक स्वरूप के विच्छेदन में लिप्त है, उसकी यह प्रवृत्ति उसे किसी विकास–पथ पर अग्रसर नहीं करती, अपितु उसके स्वयं की जीवन–सम्भावनाओं को न्यून करती जा रही है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण में भी जल को जीवन का मूलभूत आधार माना गया है, गङ्गा मात्र भौतिक रूप में ही मनुष्य–जीवन को पोषित नहीं करती, अपितु अपने सान्निध्य में विविध संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के जन्म के साथ–साथ उनका पालन एवं पोषण भी करती है। जैव विविधता एवं मनुष्य के सामाजिक जीवन में व्याप्त सांस्कृतिक विविधता गङ्गा द्वारा ही साकार होती है।

यह मानव समाज का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में गङ्गा के स्वच्छ नीर एवं उसमें संरक्षित प्राणि–समुदाय की दुर्दशा आज हमारी संवेदनहीनता की द्योतक है। ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य इन्द्रिय–रहित होकर मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन बन बैठा है। जिसे गङ्गा की निर्मलता एवं पवित्रता का कलुषन दृष्टिगत नहीं होता तथा उसकी पीड़ा की कराह भी उसे सुनाई नहीं पड़ती। गङ्गा की निर्मलता एवं पवित्रता तथा उसमें व्याप्त जीवन के संरक्षण के लिए बड़े स्तर पर बड़ी–बड़ी नीतियों के निर्माण तथा किसी बड़ी धनराशि के योगदान के बजाय, मनुष्य की संवेदनशीलता को जागृत करने एवं प्रकृति में विद्यमान प्रत्येक अस्तित्व को सम्मान देने के संस्कारों से मनुष्य को सुसज्जित करने की अधिक आवश्यकता है, जिससे कि मनुष्य स्वयं व्यक्तिगत स्तर पर गङ्गा को दूषित करने का प्रयास न कर सके। एक व्यक्ति का प्रयास स्वतः ही समूचे समाज को गङ्गा के पुनःरक्षण में संलग्न करने में सक्षम हो जायेगा; क्योंकि अन्ततः व्यक्ति ही समाज का पर्याय होता है। प्राचीन भारतीय आदर्शवादी विचारधारा को अपनाते हुए हमें गङ्गा के जल को उपयोग करने से पूर्व उसकी अविरलता का सम्मान करते हुए उसी की सहमति से उसका सदुपयोग करना सीखना होगा। इसके साथ ही वस्तु–उपभोग की संस्कृति को त्याग और गङ्गा के जीवन्त अस्तित्व को स्वीकार कर गङ्गा के दैवीय स्वरूप को अङ्गीकृत करना होगा; क्योंकि दैवीय स्वरूप ही देय प्रकृति वाले होते हैं।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

References

[1] Trivedi RC. Water quality of the Ganga River – An overview. Aquatic Ecosystem Health and Management. 2010;13(4):347–351. doi:10.1080/14634988.2010.528740

[2] Government of India. The Gazette of India. No. 328. 2009 February 20. New Delhi, India.

[3] Pal JN. The Early Farming Culture of the Middle Ganga Plain with Special Reference to the Excavations at Jhusi and Hetapatti. Paper presented in the International Seminar on the First Farmers in Global Perspective, 2006 January 18–20. Lucknow, India.

[4] Kumar D. River Ganges – Historical, cultural and socioeconomic attributes. Aquatic Ecosystem Health and Management. 2017;20(1-2):8–20. doi:10.1080/14634988.2017.1304129

[5] Thapar R. The Image of the Barbarian in Early India. Comparative Studies in Society And History. 1971;13(4):408–436.

[6] Eck DL. Ganga: The Goddess Ganges in Hindu Sacred Geography. In: Hawley JS, Wulff DM, editors. Devı: Goddesses of India. Berkeley and Los Angeles: University of California Press, Motilal Banarasi Das Publishers; Delhi, India, 1998. pp. 137–153.

[7] Tulasīdāsa. Sri Ramacaritamanasa. Motilal Banarsidass Publ; 1999.

[8] Mishra AS. Ganga Ashtakam lyrics main. bhagwat kathanak. 2020, September 27. [cited 2021, July 9]. Available from: https://www.bhagwatkathanak.in/2020/09/ganga-ashtakam-lyrics-main.html

[9] Mishra Vyas. Acharendru. Sampurnanand Sanskrit University; 2000. ISBN 8172700253. Page No. 46.

[10] Khandelwal SN. Skand Purana. Chowkhamba Sanskrit Series Office; 2016.

[11] Agni Puran. Gorakhpur: Gita Press; 2016.

[12] Valmiki V. Shrimad Valmiki ramayan. N Ramaratnam; 1933. Available from: https://archive.org/details/361952998SrimadValmikiRamayanaSanskrit1933AD/page/n9/mode/2up

[13] Bramhavaivrtpuran, bramhakhand, chapter 26, shloka 66. Gorakhpur: Gita Press; 2018. Available from: https://archive.org/details/brahma-vaivarta-puran-gita-press-gorakhpur/page/n3/mode/2up

[14] Sharma Acharya PS. Karmakand bhaskar, chapter vivah sanskar. Mathura: Yug Nirman Yojna Vistar Trust; 1982.

[15] Narad Puran. Gorakhpur: Gita Press; 2013.

[16] Geeta. Gorakhpur: Gita Press; 2014.

[17] Khemraj J. Ganga Lehri. Mumbai: Khemraj Krishnadas; 2014. Page no. 27. Available from: https://archive.org/details/ganga-lahari-of-jagannath-khemraj/page/n27/mode/2up